IJAER/January-February 2024/Volume-13/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

भारतीय चित्रकला में रेखा – अभिव्यक्ति का साधन

डा० रेशमा ज़ैदी

असिसटेंट प्रोफेसर (चित्रकला)

नायाब अब्बासी पी0जी0 कॉलिज, अमरोहा–244221

(एम0 जे0 पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)

भारतीय चित्रकला संयोजन में छः तत्वों को महत्त्वपूर्ण बताया है, जो इस प्रकार हैं। 1. रेखा, 2. रूप, 3. रगं, 4. तान, 5. पोत, 6. अन्तराल। इन सभी तत्वों में भारतीय चित्रकला में रेखा को अधिक प्रधानता दी गई है। ऐसे उदाहरण भिन्न–भिन्न चित्रों में पाये जाते हैं। प्रागैतिहासिक काल के रेखाचित्र, अजन्ता, ऐलोरा, पहाड़ी, मुगल शैली, भारतीय लोक कला के चित्र, पारम्पारिक चित्र बंगाल के पटुआ चित्र, बिहार की मधुबनी चित्रकला एवं राजस्थानी चित्रकला, ये सभी भारतीय चित्रकला के उत्कृष्ट नमूने हैं जिनमें एक तत्व की प्रधानता, देखी जा सकती है वह है रेखा–प्रधानता। इसलिए भारतीय चित्रकला को रेखा–प्रधान भी कहा गया है। विदेशो से प्रत्येक वर्ष सैकड़ों कला–प्रशंसक भारतीय चित्रकला इसी रेखा–सौन्दर्य का आनन्द लेने यहाँ आते हैं। इसी विशेषता के कारण भारतीय चित्रकला विश्व–प्रसिद्ध भी है। इसी प्रकार प्राचीन शास्त्रों में चित्रकला के कई उल्लेख प्राप्त हुए हैं, जिसमें रेखा प्रधान चित्रों का आधिक्य है। धार्मिक साहित्य में वैदिक साहित्य, धर्म–सूत्र, मतस्य पुराण आदि जिनमें चित्रकला के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, साथ ही चित्रण में रेखा की प्रधानता का उल्लेख भी पाया जाता है। भारतीय कला में विदेशियों ने जिस प्रथम तत्व को अपनाया और उसकी प्रशंसा की वह रेखा ही थी, जिसका प्रचार–प्रसार कर उसे अपनी कला में भी अपनाया। इस प्रकार भारतीय चित्रकला में रेखा की महत्ता का पता चलता है। इसी कारण भारतीय चित्रकला में रेखीय गुण की विशिष्टता राजस्थानी, मुग़ल शैली, अजन्ता, पहाड़ी शैली इत्यादि में

भी किसी न किसी रूप में बनी रही। रूप–विन्यास को लेकर हमारी सोच एक सी बनी रही, इसी कारण भारतीय चित्रों में भी रेखा के प्रयोग को समान रूप से लगातार महत्त्व मिला है।

भारतीय चित्रकला में रेखा के प्रयोग को समान रूप से लगातार महत्व मिलता रहा है। भारतीय चित्रकार रेखाएँ बनाने और आकृति बनाने में सिद्धहस्त थे। इसके सुन्दर उदाहरण अजन्ता, पहाड़ी, राजस्थानी और मुगल शैली के चित्र हैं। इन चित्रों में सरल, लयात्मक एवं भावपूर्ण रेखाओं के गुण देखे जा सकते हैं, जो इन चित्रों को महत्ता प्रदान करती हैं। चित्रकारों ने इनमें अंग विन्यास, भाव एवं मुद्राओं को कोमलता, मधुरता एवं प्रवाही रेखाओं द्वारा बड़ी कुशलता से रेखांकित किया है।

रेखाचित्रों का स्थान चित्रकला में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वास्तव में रेखाचित्र चित्रकला में वही भूमिका रखते हैं जो मानव शरीर में रीड़ की हड्डी अर्थात् 'बैक बोन' की भूमिका होती है। क्या हम हड्डियों के बिना शरीर की कल्पना कर सकते हैं, नहीं इसी प्रकार आकार रचना के लिए रेखा आवश्यक होती है।

आदिकाल तथा रेखाचित्र– हम देखते हैं कि आदिकाल के मानव को अपने मन के विचार अभिव्यक्त करने के लिए रेखा का सहारा लेना पड़ा, तब किसी भाषा का विकास नहीं हुआ था, अपने विचारों को व्यक्त करने का एकमात्र साधन रेखा थी चट्टानों एवं पत्थरों पर उल्टी–सीधी, आड़ी–तिरछी रेखाएँ खींचकर वे अपनी बात दूसरों तक व्यक्त करते थे। इस प्रकार केवल रेखा का सहारा लेकर उसने अपने विचारों का आदान–प्रदान करना सीख लिया। आदि मानव के इन चित्रों को देखकर हमें पता चलता है कि अपने विचारों तथा भावों को दूसरों तक पहुँचाने के लिए रेखा कितना उत्तम साधन है। इसके सुन्दर उदाहरण मध्य–प्रदेश के कैमूर तथा रायगढ़ स्थानों पर देखे जा सकते हैं।

यहाँ पर गुफाओं की दीवारों पर शिकार आदि के रेखाचित्र इनके अच्छे उदाहरण हैं, इनमें आकृति पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है केवल रेखाओं के माध्यम से भाव–प्रकटन पर बल दिया गया है। केवल

पतली लकड़ी के आकार में पूरी आकृति बनी हुई है, फिर भी इन चित्रों में सुन्दरता का आभास होता है, क्योंकि इन चित्रों में सुन्दर भाव प्रकट हो रहे हैं, यह कार्य केवल रेखाओं द्वारा ही सम्भव हो पाया है।

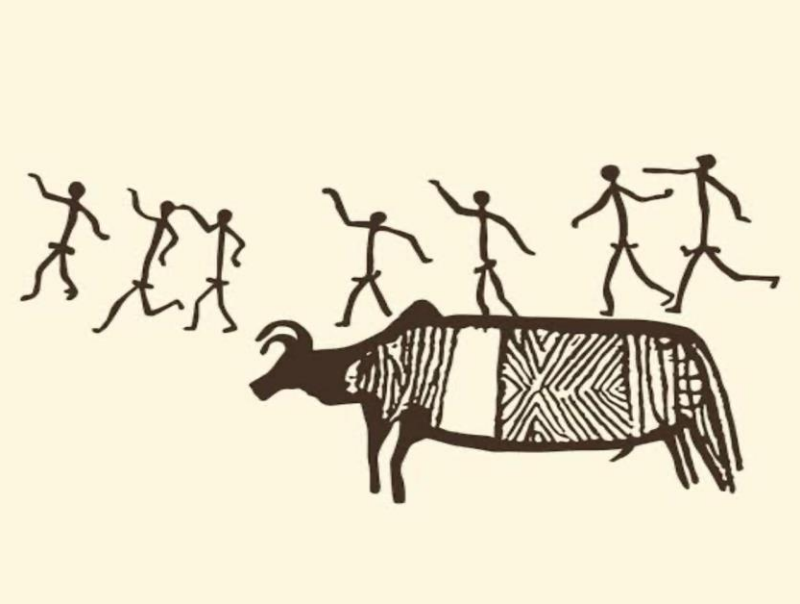

(प्रागैतिहासिक काल– रेखाचित्र)

भारतीय मिनिएचर– भारतीय मिनिएचर चित्रकला की ओर दृष्टि डालें तो यहाँ भी सुन्दर रेखा–सौन्दर्य प्राप्त होता है। यह रेखा–सौन्दर्य पहाड़ी, राजस्थानी, मुगल, जैन सभी शैली के चित्रों में देखने को मिलता है।

मुगल शैली– इस शैली के चित्रों में भारतीय एवं पर्शियन कला का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। मुगलकला में चित्रकला ने मोटी रेखाओं के स्थान पर बारीक रेखाओं ने स्थान ले लिया, मुगल–कालीन चित्रों के विषय उनके दरबार की शान–शौकत, लड़ाई के दृश्य, राजाओं और महारानियों के चित्र जिनमें सुन्दर अलंकरण एवं बारीक रेखाओं का प्रयोग देखा जा सकता है। इन चित्रों में रेखाओं का बड़ा योगदान देखा जा सकता है। क्योंकि बारीक अलंकरण में सशक्त रेखा प्रयोग उसे प्रभावी बनाता है। जहाँगीर के समय में प्राकृतिक दृश्य भी अधिक मात्रा में बने हैं, जिनमें सुन्दर पक्षियों के बहुत सुन्दर चित्र बनाए गए हैं, ये रेखा–चित्र बहुत ही बारीक रेखाओं से बनाए गए हैं। हिरन, बकरी, घोड़े, हाथी, भिन्न–भिन्न पक्षियों के चित्र और

पेड़–पौधे इन चित्रों के बारीकी देखकर कोई भी चित्रकार की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। रेखाओं के माध्यम से सुन्दर भावंकन पाया जाता है।

(मुगल शैली)

पहाड़ी शैली– पहाड़ी शैली तथा राजपूत शैली में भी रेखीय सुन्दरता पाई जाती है। इनमें सरल, लयात्मक रेखा का प्रयोग हुआ है। कांगड़ा शैली के चित्रों मे अजन्ता चित्रों के समान भावांकन देखा जा सकता है। जो सुन्दर रेखांकन द्वारा सम्भव होता दिखाई पड़ता है। बारीक रेखाओं द्वारा आकृतियों में उतार–चढ़ाव देखा जा सकता है। असामान्य रेखा–चित्र को बनाने में चित्रकारों ने सुन्दर और बारीक रेखाओं का प्रयोग किया है। इन्हें बनाने के लिए गिलहरी के बारीक बालों के प्रयोग से ब्रश बनाए जाते थे। अतः पहाड़ी शैली जो अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है, इनमें भी सुन्दर रेखा का ही प्रयोग इसे यह प्रसिद्धि दे पाया है।

(पहाड़ी शैली)

अजन्ता– रेखा–चित्रों के बारे में यदि कहा जाए तो इनमें अजन्ता के चित्रों का नाम सबसे पहले आता है। अजन्ता के चित्र आज भी विश्व–भर में सुन्दर रेखाओं के लिए जाने जाते हैं। प्रतिवर्ष लाखों सैलानी इन्हीं रेखाओं की सुन्दरता देखने यहाँ आते हैं। अजन्ता की चित्रकला में रेखाओं का बहुत महत्व है। केवल रेखाओं द्वारा भाव प्रदर्शन इसकी विशेषता है। संसार के चित्रों में कहीं भी रेखाओं द्वारा इतना सुन्दर भाव–प्रदर्शन व गतिमयता नहीं दिखाई देती। इन रेखाओं ने चित्रों की रूप–रेखा में चार चाँद लगा दिये हैं, केवल हाथ की अंगुलियों द्वारा स्पष्ट भाव–प्रदर्शन रेखाओं की शक्ति एवं लोच का प्रभाव है, जो इन चित्रों की विशेष विशेषता है। केवल रेखाओं द्वारा प्रकाश, गोलाई तथा उभार दर्शाया गया है। इन रेखाओं के द्वारा कलाकार जो भाव प्रकट करना चाहता था सफलता से प्रकट किया है। ये रेखाएँ लयात्मक हैं

जिसके कारण चित्रों में लावण्य उत्पन्न हो गया है। ये सब उन महान कलाकारों की देन है जिन्होंने केवल सशक्त रेखाओं के द्वारा अजन्ता के चित्रों को अमरत्व प्रदान किया।

(रेखाचित्र अजन्ता से)

बच्चों की कला में रेखा का महत्व– एक बच्चे का दृष्टिकोण अन्य के दृष्टिकोण से काफी भिन्न होता है। वह हर पल कुछ न कुछ नया सीख रहा होता है। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में माता–पिता, शिक्षकों की कहानियाँ बच्चों के मनोविकास का मुख्य अंग होती हैं। यहीं से बच्चों की कल्पनाएँ और विचारों को पंख मिलते हैं, वे अपने इन सुन्दर कल्पनाओं को उड़ान देना चाहते हैं इसके लिए उनके पास सबसे आसान तरीका होता है रेखाओं द्वारा अंकन। वे अपने विचारों को रेखा–प्रयोग द्वारा अभिव्यक्त करने लगते हैं जो कि उनके द्वारा खींची गई आड़ी–तिरछी रेखाओं में देख सकते हैं।

प्रत्येक बालक में एक कलाकार होता है, बच्चों को कला पसंद होती है, क्योंकि इसे करने में इन्हे आनन्द मिलता है। उनके द्वारा खींची गई यह रेखाएँ एवं रूपाकृतियाँ इन्हें आत्म–अभिव्यक्ति प्रदान करती

हैं। एक बालक के लिए कला मस्ती करने, निर्णय लेने और विचारों को व्यक्त करने का एक तरीका है। बच्चे कभी अपने काम से असंतुष्ट नहीं होते, वे स्वतन्त्र होकर अपनी खुशी से चित्रण करते हैं। कला बच्चों को उनकी पसंद, विचार और भावनाओं को स्वतन्त्रता प्रदान करती है। बच्चे स्वतन्त्र होकर खुशी से चित्रण करते हैं, क्योंकि एक चित्र हज़ारों शब्दों को व्यक्त करता है, जिससे उनके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है।

बच्चों के अनुसार कला में उन्हें आनन्द मिलता है, कला स्वाभाविक रूप से रचनात्मकता से जुड़ी है, इसके द्वारा बच्चे का सर्वागीण विकास होता है।

अतः चित्रकला में रेखाओं का बहुत महत्व हैं चित्रों में रेखाओं द्वारा सुन्दर भाव–अंकन पाया जाता है। यह रेखाएँ ही हैं, जो कलाकार को भाव–व्यक्त करने मे सहायक होती हैं। प्रागैतिहासिक काल से लेकर, अजन्ता, पहाड़ी, राजपूत, मुगल या बच्चों की कला इन सभी में भाव–अभिव्यक्ति रेखा द्वारा सम्भव देख सकते हैं अर्थात् रेखाएँ किसी भी काल में भाव–अंकन का सशक्त माध्यम है, ऐसा कहना सत्य है।

सन्दर्भः

- गहलौत जगदीशचन्द्र राजपूताने का इतिहास
- डॉ0 आर0ए0 अग्रवाल (कला–विलास) भारतीय चित्रकला की विवेचना
- वाचस्पति गैरोला–भारतीय चित्रकला
- डॉ0 अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास, 1999
- रायकृष्ण दास भारत की चित्रकला
- मधुकर चतुर्वेदी, भारतीय चित्रकला के सन्दर्भ